कुमार-बिमल के साहसिक कारनामे

अफ्रिका अभियान

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक
जयदीप शेखर

अफ्रिका अभियान

'कुमार-बिमल' श्रृंखला की बँगला साहसिक कहानी
'आबार जॅकेर धॅन' का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit

Image by wirestock on Freepik

-: eBook :-

AFRIKA ABHIYAN

(Adventure to Africa)

Hindi translation of the Bengali adventure story 'Aabar Jaker Dhan' from the 'Kumar-Bimal' series.

Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen Name: Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2023: Translator

Available at: jagprabha.in

Price: ` 100.00

***

हेमेन्द्र कुमार राय
(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

अफ्रिका अभियान

भूत या चोर

शाम का समय। दो दोस्त अगल-बगल बैठे हुए थे। एक के हाथों में एक अखबार और दूसरे के हाथों में एक खुली पुस्तक। सामने एक टेबल, जिसके नीचे कुण्डली मारकर सो रहा था बड़ा-सा एक देशी कुत्ता। दोस्तों में एक का नाम बिमल था और दूसरे का कुमार। कुत्ते का नाम था- बाघा। 'यक्ष का खजाना' के पाठक-पाठिकागण बेशक इन्हें पहचान गये होंगे?

कुमार अचानक हाथों के अखबार को टेबल पर पटकते हुए बोल उठा, "ऐसी की तैसी अखबार की!"

बिमल ने किताब से सिर उठाकर कहा, "क्या हुआ भाई? अचानक अखबार पर गुस्सा क्यों?"

कुमार बोला, "गुस्सा न करूँ, तो क्या करूँ? अखबार में कोई नयी खबर ही नहीं है- वही तीतर के दो आगे तीतर और तीतर के दो पीछे तीतर! ओफ्फ, यह धरती एकदम से नीरस हो गयी है!"

बिमल ने किताब बन्द कर टेबल पर रखते हुए कहा, "यह धरती और अच्छी नहीं लग रही? तो क्या तुम फिर से मंगल ग्रह पर लौट जाना चाहते हो?"[1]

"नहीं, देखी हुई जगह दुबारा देखने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। इससे तो बेहतर चन्द्रलोक रहेगा।"

"अरे बाप रे, वहाँ तो भयानक ठण्ड होगी!"

"तो फिर पाताललोक चलते हैं- चलो।"

"चन्द्रलोक जाने से भी तुम्हें शायद पाताल में ही रहना पड़े। वहाँ जमीन की सतह पर चिर-तुषार का राज्य है। विद्वानों का अनुमान है कि चन्द्रलोक के जीव पाताल में रहते हैं।"[2]

"लेकिन चन्द्रलोक जायेंगे कैसे?"

"इस पर बाद में सोचा जायेगा, ...फिलहाल तो रामहरि के कदमों की आहट सुन रहा हूँ, शायद हमारा नाश्ता आ रहा है, अतः– "

रामहरि ने कमरे में प्रवेश किया, उसके दोनों हाथों में नाश्ते की दो थालियाँ थीं।

बिमल बोला, "आओ-आओ रामहरि, आओ! रामहरि, तुम जब मुस्कुराते हुए भोजन की थाली हाथों में लिये कमरे में आते हो, तब तुम बहुत अच्छे लगते हो। आज क्या बनाये हो रामहरि?"

रामहरि दोनों के सामने एक-एक थाली रखते हुए बोला, "मछली की कचौड़ियाँ और मांस के समोसे!"

बिमल बोल पड़ा, "अरे वाह-वाह, वाह-वाह! ...हाथ चलाओ कुमार, हाथ चलाओ!"

कुमार एक कचौड़ी उठाते हुए बोला, "ईश्वर रामहरि को लम्बी उम्र दे! रामहरि के न रहने से इस उबाऊ धरती पर हमारा रहना दुभर हो जाता!"

मांस-मछली की गन्ध पाकर बाघा की भी नीन्द टूट गयी। खड़े होकर पहले एक डण्ड लगाकर वह चंगा हुआ, फिर आगे बढ़कर उसने पूँछ हिलानी शुरू कर दी। इसी समय मुख्य दरवाजे पर कड़े बजाने की आवाज सुनायी पड़ी। बिमल ने कहा, "देखना रामहरि, कौन आया है?"

रामहरि निकल गया। कुछ देर में लौटकर उसने बताया, "एक सज्जन आप लोगों से मिलना चाहते हैं। उन्हें बैठकखाने में बैठा दिया है।"

नाश्ता समाप्त कर बिमल और कुमार नीचे गये। बाहर वाले कमरे में एक सज्जन बैठे हुए थे। उनकी उम्र पच्चीस-छब्बीस से ज्यादा नहीं होगी। गोरा-चिट्टा रंग, चेहरे पर सौम्यता। बिमल ने पूछा, "किससे मिलना है?"

सज्जन बोले, "आप लोगों से ही। आप लोग मुझे नहीं पहचानते, लेकिन मैं आप लोगों को पहचानता हूँ। मेरा नाम माणिकलाल बसु है, मेरा घर बहुत पास में ही है।"

बिमल बोला, "हमसे क्या काम है आपका?"

"भाई साहब, मैं एक बड़ी विपत्ति में पड़ गया हूँ। मेरे घर में लगता है कि भूतों का उपद्रव शुरू हो गया है।"

बिमल बोला, "लेकिन इसके लिए हमारे पास क्यों आये हैं? हम तो ओझा नहीं हैं!"

माणिकबाबू बोले, “यह ऐसा-वैसा भूत नहीं है भाई साहब, ओझा-गुणी इसमें कुछ नहीं कर पायेंगे। मैंने आप लोगों के सारे कारनामों के बारे में सुन रखा है, इसलिए आप लोगों से परामर्श लेने आया हूँ।”

बिमल ने कहा, “ठीक है, पूरा मामला पहले साफ-साफ बताईए।”

माणिकबाबू बोले, “जैसा कि मैंने कहा न- भूतों का अत्याचार! अत्याचार भी कोई ऐसा-वैसा? भयानक अत्याचार! उफ्फ!”

बिमल और कुमार हँस पड़े।

“आप लोग हँस रहे हैं? बिलकुल हँसिए! लेकिन मेरा घर यदि आप लोगों का घर होता, तो हँसना भूल जाते। समझे भाई साहब, मेरा घर आजकल भूतों का बसेरा हो गया है!”

“सो कैसे- जरा हम भी सुनें?”

“तो फिर सुनिए। ठीक महीना भर पहले अपने घर में ताला लगाकर मैं अपने गाँव गया हुआ था। लौटकर देखा, सदर दरवाजे का ताला टूटा हुआ था। अन्दर जाकर देखा, आँगन में चाँदी के बर्तन और श्रीमतीजी के गहने पड़े हुए थे। ऊपर जाकर देखा, हर कमरे का ताला टूटा हुआ था! किसी कमरे में दराज से कागजात निकालकर कमरे भर में फैला दिये गये थे, किसी कमरे में लोहे का सन्दूक टूटा पड़ा था, किसी कमरे में आलमारी खोलकर कपड़े-लत्ते फैला दिये गये थे, लेकिन गायब कुछ नहीं हुआ था। बताईए जरा, यह क्या बात हुई? चोर आने से ये सारी चीजें चोरी चली जातीं, लेकिन मेरी कोई चीज चोरी नहीं गयी। यह भूतिया मामला नहीं हुआ?”

बिमल बोला, “उसके बाद?”

“पन्द्रह दिनों पहले देर रात में मेरी नीन्द खुल गयी। जागते ही सुना, मेरा टेरियर कुत्ता बुरी तरह से भौंक रहा था। इसके बाद ही एक आर्तनाद कर वह चुप हो गया। मैं डर से बाहर नहीं निकल सका, कमरे से ही चिल्लाने लगा। जब घर के सारे लोग जाग गये, तब बाहर आकर हमने देखा कि मेरे कुत्ते का गला दबाकर किसी ने उसे मार दिया था। ...और उसके मुँह में बालों का एक गुच्छा था!”

बिमल ने विस्मित होकर कहा, “बालों का गुच्छा?”

"जी हाँ, लेकिन वे बाल मेरे कुत्ते के नहीं थे। बालों को मैंने कागज की पुड़िया में रख लिया है। देखिए-" कहकर माणिकबाबू ने कागज की एक छोटी-सी पुड़िया निकालकर बिमल के हाथों में दी।

बिमल ने पुड़िया खोलकर बालों को ध्यान से देखा, फिर कहा, "ठीक है, इसे अभी मेरे पास रहने दीजिए। उसके बाद क्या हुआ- बताईए।"

माणिकबाबू बताने लगे, "बीती रात मुझे नीन्द नहीं आ रही थी। मध्यरात्रि थी- चारों तरफ निस्तब्धता छायी हुई थी। अचानक सुनायी पड़ा, मेरे घर की छत पर 'धम्म-धम्म' की आवाज हो रही थी- यह किसी आदमी के पैरों की आवाज नहीं थी, आदमी के पैरों की आवाज इतनी भारी-भरकम नहीं होती- ठीक लग रहा था कि कोई हाथी हमारी छत पर चल रहा है! डर के मारे मेरे सिर के बाल तक खड़े हो गये, काँपते हुए किसी तरह बिस्तर पर उठकर बैठा। घर में हो रहे गोलमाल को देखते हुए मैंने एक बन्दूक खरीद ली थी। जल्दी से उस बन्दूक से एक कारतूस दागा, छत की आवाज बन्द हो गयी। फिर रात में कोई हंगामा नहीं हुआ।"

बिमल ने पूछा, "आपने पुलिस में खबर दी है?"

"हाँ। पुलिस के पल्ले कुछ नहीं पड़ा।"

"देखिए माणिकबाबू, आपकी सारी बातें सुनकर लगता है कि आपके घर में जो लोग आ रहे हैं, वे मामूली चोर-उचक्के नहीं हैं। वे रुपये-पैसे की लालच में नहीं आ रहे। आपके घर में शायद ऐसी कोई चीज है, जिसका मोल रुपये-पैसों से कहीं ज्यादा है।"

कुछ पल चुप रहने के बाद माणिकबाबू कुछ सोचते हुए बोले, "बिमलबाबू, इस बारे में तो एक बार भी मैंने नहीं सोचा! ...हाँ, आप ठीक कह रहे हैं, मेरे घर में एक मूल्यवान चीज तो है! चाहने से मैं राजाओं का ऐश्वर्य हासिल कर सकता हूँ।"

"इसका मतलब?"

"तो फिर शुरू से ही बताता हूँ। मेरे पिताजी के दो भाई थे। मँझले चाचा का नाम सुरेनबाबू और छोटे चाचा का नाम माखनबाबू था। बीते विश्वयुद्ध के समय मेरे दोनों ही चाचा फौज में भर्ती होकर अफ्रिका गये थे। फिर उनकी कोई खबर नहीं आयी। आज से तीन महीने पहले जंजीबार से अचानक मँझले चाचा की एक

लम्बी-चौड़ी चिट्ठी मिली। चिट्ठी की बातों का जो सारांश था, वह मैं मँझले चाचा के ही शब्दों में आपको संक्षेप में बताता हूँ:

'प्रिय माणिक,

'मैं अभी मृत्युशैया पर हूँ, मेरे बचने की कोई आशा नहीं है। इतने दिनों तक मैं तुम लोगों की कोई खबर नहीं ले पाया, न ही अपनी कोई खबर दे पाया। कारण यह है कि अब तक अफ्रिका के ऐसे इलाकों में मैं तैनात था, जहाँ से समाचार भेजने का कोई उपाय नहीं था।

'अभी यह पत्र मैं तुम्हें क्यों लिख रहा हूँ- वह सुनो। ईस्ट-अफ्रिका में टांगानिका झील के पास एक पहाड़ की गुफा में मैंने अगाध ऐश्वर्य खोज निकाला है। इतना बड़ा खजाना देखकर बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं का भी सिर चकरा जायेगा।

'यह खजाना मेरा ही होता, लेकिन असाध्य बीमारी के कारण अभी मैं परलोक सिधारने वाला हूँ। मेरी पत्नी नहीं है और पुत्र भी नहीं, इसलिए इस खजाने का पता मैं तुम्हें दे जा रहा हूँ। खजाने का समस्त धन-रत्न आदि तुम पा सकते हो।

'इस चिट्ठी के साथ नक्शा भेज रहा हूँ, इसे बहुत सम्भालकर रखना। किस रास्ते से, कैसे, कहाँ जाने पर खजाना मिलेगा- इस नक्शे में वे सारी बातें लिखी हुई हैं। किसी और को इस नक्शे के बारे में पता नहीं चलना चाहिए।

'और एक बात ध्यान में रखना। अकेले कभी इस खजाने को हासिल करने मत आना। रास्ता दुर्गम है, कदम-कदम पर जान का खतरा है- सिंह, बाघ, जंगली हाथी, हिपो, गैण्डे, साँप हैं; जंगली जनजातियाँ हैं और कई तरह की बीमारियाँ हैं। कब किसके हाथों जान चली जाय- कहा नहीं जा सकता। अगर इन विपत्तियों से पार पा सकते हो, तभी आना; नहीं, तो नहीं।

'चिट्ठी के साथ ही इस खजाने का एक इतिहास भी भेज रहा हूँ, पढ़ लेने से काफी कुछ स्पष्ट हो जायेगा।

'ईश्वर तुम्हारा मंगल करें।

'इति, तुम्हारे- मँझले चाचा।'

"-तो बिमलबाबू, आपको क्या लगता है, इस नक्शे के चलते ही मेरे घर में यह सब हो रहा है? लेकिन इन बातों का जिक्र तो मैंने किसी से भी नहीं किया है!"

बिमल कुछ देर तक कमरे में चुपचाप चहलकदमी करता रहा, फिर बोला, "आपके मँझले चाचा की चिट्ठी और वह नक्शा अभी तक आप ही के पास है तो?"

"बिलकुल! उस चिट्ठी और नक्शे को मैंने श्रीमद्भागवत में रखकर पढ़ाई के कमरे में किताबों की आलमारी में रख रखा है। वहाँ से कोई उसे खोजकर नहीं निकाल सकता।"

"आपके मँझले चाचा की चिट्ठी मिली है आपको तीन महीने पहले?"

"जी हाँ।"

"और इसके ठीक दो महीने बाद से ही आपके घर में उपद्रव शुरू हो गये। इतने पर भी आप नहीं समझ पा रहे हैं कि चोर आपके इस नक्शे को ही चुराना चाहते हैं?"

"ये चोर क्या अन्तर्यामी हैं? नक्शे की बात अभी तक सिर्फ मैं जानता था और आज आप दोनों ने जाना।"

इसी समय बाघा ने कमरे में प्रवेश किया। एक बार माणिकबाबू के दोनों पैरों को उसने गम्भीरता के साथ सूँघा और फिर रास्ते की तरफ वाली खिड़की के पास जाकर वह गुर्राने लगा।

माणिकबाबू दोनों पैर उठाकर कुर्सी पर खड़े होकर बोले, "ओ भाई साहब, आपका कुत्ता ऐसे क्यों कर रहा है? काटेगा क्या?"

बिमल एक छलाँग में खिड़की के पास जा पहुँचा था। ऊपर के खुले पल्लों से बाहर झाँककर उसने देखा, खिड़की के नीचे बने रॅक[3] पर बैठकर किसी ने खिड़की के निचले बन्द पल्लों से अपना कान सटा रखा था। बिमल ने सरियों से हाथ निकालकर उसके बाल पकड़ने चाहे, लेकिन नहीं सका, वह आदमी एक झटके में रॅक से उतरकर सरपट भागते हुए आँखों से ओझल हो गया।

माणिकबाबू बोले. "अब यह क्या था?"

कुमार ने बताया, "चोरों ने आपके पीछे जासूस भेजा था।"

"मेरे पीछे! अरे बाप, सो क्यों?"

"और क्यों, आप हम लोगों के पास किसलिए आ रहे हैं- यह जानने के लिए। आपने नक्शा कहाँ रख रखा है- यह जरूर उसने सुन लिया है।"

माणिकबाबू फिर हताश होकर कुर्सी पर बैठ गये और बोले, "तो अब उपाय?"

बिमल बोला, "उठिए माणिकबाबू, जल्दी घर चलिए। आज रात जरूर चोर लोग आपके घर धावा बोलेंगे। आज हम भी आपके घर में पहरा देंगे।"

भूत और मनुष्य

रात के दस बज रहे थे। सभी माणिकबाबू के घर पहुँचे। माणिकबाबू का घर गंगा से मिलने वाले एक पनाले के बिलकुल किनारे पर था। पहले पनाला, उसके बाद रास्ता, फिर एक छोटा मैदान और उसके बाद माणिकबाबू का घर। इलाका कोलकाता के सीमाने में होने से क्या हुआ, जितना वीरान इलाका था, मकान उतने ही दूर-दूर बने हुए थे। आकाश में चाँद का एक टुकड़ा भले उगा हुआ था, लेकिन वह नाम मात्र के लिए था। चारों तरफ अन्धेरे का साम्राज्य था। आस-पास के पेड़ बस काले-काले साये-जैसे नजर आ रहे थे। टॉर्च की रोशनी एक तरफ डालते हुए बिमल बोला, "माणिकबाबू, आपके घर के बगल में यह विशाल पेड़ जो हाथ फैलाये खड़ा है, वह शायद बरगद है?"

माणिकबाबू बोले, "जी हाँ।"

सन्देहास्पद निगाहों से उस पेड़ के चारों तरफ रोशनी डालते हुए बिमल कुछ कदम आगे बढ़ा। माणिकबाबू ने कौतूहल के साथ पूछा, "क्या देख रहे हैं, बताईए तो?"

"देख रहा था कि इस पेड़ में कोई छुपकर बैठा तो नहीं है?"

"अरे बाप, ऐसा भी है! यह सब देखने-सुनने की जरुरत नहीं है भाई साहब, चलिए, घर के अन्दर चलकर दरवाजा बन्द करके बैठते हैं।"

"लेकिन चोर यदि इस पेड़ से छलाँग लगाकर आपकी छत पर जा पहुँचे, तो सदर दरवाजा बन्द करने का फायदा क्या?"

"पेड़ से छलाँग लगाकर छत पर जा पहुँचे? असम्भव!"

"क्यों?"

"पेड़ से मेरे घर की छत ग्यारह-बारह हाथ की दूरी पर है। इतनी लम्बी छलाँग लगा पाना आदमी के बस में नहीं है!"

बिमल आगे बढ़कर पेड़ तथा घर के बीच की दूरी का मुआयना कर कुछ आश्वस्त होकर बोला, "नहीं, आपकी बात ही सही है; लेकिन मैं यह सोचकर हैरान हूँ कि फिर बाहर के लोग आपके घर के अन्दर जाते किस तरह से हैं?"

"मुझे भी कुछ समझ में नहीं आता है।"

टॉर्च की रोशनी मकान की दीवारों पर घुमाते हुए बिमल बोला, "समझ गया। छत से बरसाती पानी निकालने के लिए ये जो तीन-चार पाईप लगे हैं, चोर बेशक इन्हीं के सहारे ऊपर चढ़ते हैं।"

"अरे बाप, क्या कह रहे हैं? पट्ठों को गिरकर सिर फुड़वाने का डर नहीं है!"

बिमल ने कहा, "चलिए, अभी हम लोग अन्दर चलें।"

माणिकबाबू के आगे बढ़कर दरवाजे का कड़ा बजाते ही एक नौकर ने अन्दर से दरवाजा खोल दिया।

घर के अन्दर जाकर बिमल ने कहा, "माणिकबाबू, आप सदर दरवाजे को अन्दर से ताला मारकर एकदम से बन्द कर दीजिए। कोई और दरवाजा न खोले।"

माणिकबाबू ने ऐसा ही हुक्म दिया।

बिमल ने पूछा, "अच्छा, आपके नौकर-चाकर सभी विश्वासी हैं न?"

"जी हाँ, इनमें से किसी पर सन्देह नहीं कर सकते, सभी पुराने नौकर हैं। केवल... "

"केवल क्या? कहिए, रूक क्यों गये?"

"केवल एक आदमी नया है।"

"नया? कितने दिनों से है वह यहाँ?"

"बस कल ही आया है।"

"आप उसे पहचानते नहीं हैं?"

"नहीं, लेकिन वह ऐसा भी नहीं है कि उस पर सन्देह किया जाय। चेहरे पर शराफत है, शान्त-शिष्ट है, आँखें मिलाकर तो बात भी नहीं करना जानता। सच तो यह है कि चेहरा देखकर ही उसे रखा है।"

"अच्छा, एक बार बुलाईए तो उसे।"

जिस नौकर ने सदर दरवाजे पर ताला लगाया था, उसकी ओर देखकर माणिकबाबू बोले, "अरे, रामू को बुलाना एक बार।"

वह बोला, “जी, रामू शायद बाहर गया है।”

“बाहर गया है?”

“जी, ठीक-ठीक नहीं कह सकता, लेकिन बहुत देर से उसे नहीं देख रहा हूँ।”

माणिकबाबू ने आँखें तरेर कर कहा, “मैंने कहा था न कि शाम के बाद कोई घर से बाहर नहीं जायेगा!”

बिमल बोला, “रहने दीजिए माणिकबाबू, यहाँ खड़े होकर डाँट-डपट करने की कोई जरुरत नहीं है। हम लोग इस वक्त आपके पढ़ाई वाले कमरे में जाना चाहते हैं।”

माणिकबाबू बोले, “चलिए।”

कुमार ने फुसफुसाकर पूछा, “उसी कमरे में आपके चाचाजी की चिट्ठी और नक्शा है न?”

“जी हाँ।”

...पढ़ाई वाले कमरे के दरवाजे के पास आते ही माणिकबाबू बुरी तरह चौंककर बोल उठे, “अरे, यह क्या?”

कुमार ने पूछा, “क्या हुआ माणिकबाबू?”

कुछ पल अकचकाये खड़े रहकर माणिकबाबू बोले, “इस कमरे का ताला किसने खोला?”

बिमल ने पूछा, “आप ताला लगाकर गये तो थे न?”

“बिलकुल! मैंने अपने हाथों से ताला लगाया था- ”

बिमल के एक धक्का मारते ही दरवाजा खुल गया। सबसे पहले कमरे में दाखिल होकर उसने कहा, “माणिकबाबू, मुझे जिसका डर था, लगता है- वही हुआ। देखिए-देखिए, मैप और चिट्ठी अभी भी है या नहीं?”

माणिकबाबू तेजी से कमरे में घुसकर आलमारी के पास गये। फिर एक मोटी-सी किताब निकालकर उसके कुछ पन्ने पलटकर बोले, “सत्यानाश हो गया! वह चिट्ठी भी नहीं है और नक्शा भी नहीं है!”

कुमार बोला, “नहीं माणिकबाबू, हम लोग ठीक समय में आ पहुँचे हैं!”

माणिकबाबू सिर पर हाथ मारते हुए बोले, “खाक ठीक समय पर पहुँचे हैं। मेरा तो– ”

कुमार ने उन्हें रोकते हुए कहा, “पहले उस टेबल के नीचे झाँककर देखिए!”

माणिकबाबू और बिमल ने कमरे के एक कोने में रखे टेबल के नीचे झाँककर देखा- वहाँ कोई दुबककर बैठा हुआ था।

कुमार बोला, "चोरी करके चोर अभी तक भाग नहीं पाया है!"

बिमल ने आगे बढ़कर उस व्यक्ति की दोनों टाँगों को पकड़कर घसीटते हुए उसे बाहर निकाला!

उसके चेहरे की ओर देखकर माणिकबाबू आश्चर्य के साथ बोले, "रामू!"

बिमल ने कहा, "यही क्या आपका नया नौकर है?"

माणिकबाबू बोले, "हाँ। अरे रास्कल, इसी के लिए तुम मेरे घर में नौकरी लिये थे? जिस थाली में खाना, उसी में छेद?"

ठीक इसी समय छत से आवाज आयी- 'धम्म धम्म धम्म!' माणिकबाबू ने गलत नहीं बताया था- लग रहा था कि कोई हाथी छत पर चल-फिर रहा था! उसकी प्रत्येक धमक से मकान तक थर्रा जा रहा था- मनुष्य के पैरों की धमक ऐसी नहीं हो सकती थी!

माणिकबाबू भयभीत स्वर में बोले, "सुनिए-सुनिए! नीचे चोर और ऊपर भूत! मैं तो गया काम से!"

केवल पैरों की धमक सुनकर ही डर जाने वाले लड़के बिमल और कुमार नहीं थे। आसाम के खासी पहाड़ में, मंगल ग्रह पर और डायनासोरों से भरे जंगल में जिस तरह के खतरों से वे निपटे थे, उनके सामने तो यह तुच्छ मामला था! अतः वे स्थिर खड़े होकर ध्यान से सुनने लगे- धमक की आवाज क्रमशः पूर्व की ओर जा रही थी।

बिमल ने पूछा, "माणिकबाबू, छत की पूरब दिशा में क्या है?"

"नीचे आने की सीढ़ियाँ।"

"फिर तो जिसके कदमों की धमक सुन रहा हूँ, वह शायद हमसे ही मिलने के लिए आ रहा है।"

माणिकबाबू भयभीत होकर बोले, "अरे बाप, यह क्या कह रहे हैं?"

बिमल ने कहा, "आओ कुमार, पहले तो इस आदमी के हाथ-पाँव बाँधकर इसे उल्टा लिटा दें, फिर जो महानुभाव नीचे आ रहे हैं, उनका बढ़िया से स्वागत करते हैं।"

माणिकबाबू ने भागकर दीवार पर टँगी अपनी नयी बन्दूक उतार ली। इसके बाद खुली खिड़की से उसकी नली बाहर निकालकर दोनों आँखें मींचकर, मुँह भींचकर धाँय से एक कारतूस दाग दिया। बन्दूक दागते ही वे एक कुर्सी पर धप्प-से बैठ गये। छत पर हो रही चहलकदमी बन्द हो गयी!

कुमार ने कहा, "ओ माणिकबाबू, आँखें क्यों बन्द कर रखी हैं आपने?"

माणिकबाबू बोले, "अरे बाप, बन्दूक दागना क्या हँसी-खेल है?" कहकर खिड़की पर जाकर फिर दूसरा कारतूस दागा उन्होंने- वैसे ही मुँह भींचकर और आँखें मींचकर।

छत पर कदमों की 'धम्म-धम्म' आवाज फिर मकान को कँपाते हुए शुरू हुई- इस बार वह पश्चिम की ओर जा रही थी। इसके बाद जो आवाज हुई, उससे पता चला कि छत से किसी ने बरगद के पेड़ पर छलाँग लगायी।

माणिकबाबू के हाथों से बन्दूक लेते हुए बिमल बोला, "जल्दी कारतूस दीजिए, जल्दी!"

माणिकबाबू ने भागकर दो कारतूस लाकर बिमल के हाथों में दिये। बन्दूक में कारतूस डालते हुए बिमल ने कहा, "कुमार, तुम टॉर्च की रोशनी मैदान में डालकर देखो तो- पेड़ से कौन उतर रहा है?"

कुमार टॉर्च जलाकर खिड़की पर गया और बिमल भी उसके बगल में जा खड़ा हुआ, लेकिन टॉर्च की रोशनी उतनी दूर तक ठीक से नहीं पहुँची। सिर्फ इतना पता चला कि चार-पाँच साये मैदान पर से भाग रहे थे, जिनमें से एक साया बहुत ही काला था, उसका आकार विशाल था और उसके शरीर पर एक टुकड़ा भी कपड़ा नहीं था।

माणिकबाबू एक बार खिड़की से बाहर झाँककर देखते ही "भूत-भूत" चिल्लाते हुए पीछे हट गये।

कुमार विस्मित स्वर में बोला, "क्या है वह? देखने में आदमी-जैसा है, लेकिन-"

बिमल ने सिर घुमाकर रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा, "अब गोली चलाना बेकार है, दायरे से बाहर निकल गये हैं वे।"

माणिकबाबू बोले, "लेकिन हमने यह क्या देखा बिमलबाबू! भूत और मनुष्य एक साथ भाग रहे थे?"